(1) मेरी प्रिय पुस्तक : श्रीरामचरितमानस

रूपरेखा

- ★ **प्रस्तावना**
- ★ **श्रीरामचरितमानस का परिचय**
- ★ **रामचरितमानस में नैतिकता एवं सदाचार**
- ★ **लोककल्याण की भावना**
- ★ **समन्वय की भावना**
- ★ **मानव जीवन के आदर्शों की प्रस्तुति**
- ★ **रामराज्य की परिकल्पना**
- ★ **नीति एवं भक्ति भाव**
- ★ **महाकाव्यों में श्रेष्ठतम**
- ★ **उपसंहार**

प्रस्तावना — रामचरितमानस गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित ऐसी ही कालजयी कृति है जिस पर प्रत्येक ' हिन्दी भाषी ' को गर्व है । इस कृति ने जन - जन को प्रभावित किया है , इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि इसे प्रत्येक हिन्दू परिवार के ' पूजा घर ' में स्थान मिला हुआ है ।

श्रीरामचरितमानस का परिचय— श्रीरामचरितमानस भक्तिकाल के प्रतिनिधि कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य है। इसकी रचना सम्वत् १६३१ विक्रमी में रामनवमी को प्रारम्भ हुई और 2 वर्ष 7 माह 26 दिन में अर्थात् सम्वत् १६३३ वि. के मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष में यह सम्पूर्ण हुआ। रामचरितमानस श्रीराम के जीवन पर आधारित महाकाव्य है जिसमें सम्पूर्ण रामकथा को सात काण्डों में प्रस्तुत किया गया है । इन काण्डों के नाम हैं— बालकाण्ड , अयोध्याकाण्ड , अरण्यकाण्ड , किष्किंधाकाण्ड , सुन्दरकाण्ड , लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड |

रामचरितमानस में नैतिकता एवं सदाचार — श्रीरामचरितमानस में कवि का मूल उद्देश्य राम के चरित्र माध्यम से नैतिकता एवं सदाचार की शिक्षा देना रहा है। तुलसी ने स्वयं स्वीकारा है कि इसमें नाना पुराणों , वेदों , शास्त्रों का सार है। तुलसीदास ने इसकी रचना लोककल्याण एवं ' स्वान्तः सुखाय ' को दृष्टि में रखकर की है । काम , क्रोध , लोभ , मोह , दम्भ से रहित हो , दूसरे की विपत्ति में दुखी रहने वाले तथा दूसरे की प्रसन्नता में सुखी रहने वाले व्यक्ति के हृदय में ही ईश्वर निवास करता है, यथा –

काम क्रोध मद मान न मोहा । लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ।।
जिनके कपट दम्भ नहिं माया । तिनके हृदय बसहु रघुराया ||

रामचरितमानस हमें सदाचार की शिक्षा देने वाला एक महान ग्रन्थ है जो हमें यह सिखाता है कि हम रामवत आचरण करें और रावणवत आचरण न करें ।

Gyansindhu Classes

लोककल्याण की भावना — श्रीरामचरितमानस की रचना लोककल्याण की भावना से की गई है । तुलसी हैं कि लोग उनके इस ग्रन्थ को पढ़कर सदाचारी बनें। तुलसी का यह भी मत है कि कविता का मूल प्रयोजन लोककल्याण ही है । वे कहते हैं –

कीरति भनिति भूति भल सोई । सुससरि सम सब कहँ हित होई ॥

समन्वय की भावना — तुलसीदास ने रामचरितमानस में समन्वय की चेष्टा करने वाले एक महान कवि हैं। जिस समय तुलसी का प्रादुर्भाव हुआ उस समय समाज में विषमता व्याप्त थी। तुलसी ने दार्शनिक क्षेत्र में समन्वय का प्रयास किया है। रामचरितमानस के माध्यम से समन्वय की विराट चेष्टा की है।

मानव जीवन के आदर्शों की प्रस्तुति— रामचरितमानस व्यवहार का दर्पण है। मानव को कैसा आचरण करना चाहिए इसका आदर्श रामचरितमानस के विभिन्न चरित्र हैं। आदर्श भाई , आदर्श पिता , आदर्श पत्नी , आदर्श पुत्र , आदर्श माता , आदर्श सेवक , आदर्श राजा एवं आदर्श प्रजा का स्वरूप रामचरितमानस में प्रस्तुत किया गया है । भरत आदर्श भाई हैं , तो राम आदर्श पुत्र हैं , लक्ष्मण और हनुमान आदर्श सेवक के उदाहरण हैं तो माता कौशल्या माता का आदर्श हैं । राम आदर्श राजा हैं तो अयोध्या की जनता आदर्श प्रजा है ।

रामराज्य की परिकल्पना— रामचरितमानस में गोस्वामी जी ने रामराज्य की परिकल्पना करते हुए एक आदर्श शासन व्यवस्था का ढाँचा प्रस्तुत किया है । राम के राज्य में क्या व्यवस्था थी इसका चित्रण निम्न पंक्तियों में किया गया है —

दैहिक दैविक भौतिक तापा । रामराज काहूहि नहि व्यापा ।
सब नर करहिं परसपर प्रीती । चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ॥

नीति एवं भक्ति भाव— रामचरितमानस में नीति , भक्ति , वैराग्य का भी अनूठा संगम है। पारस्परिक व्यवहार की जो शिक्षा इस ग्रन्थ में दी गई है , वह अन्यत्र नहीं मिलती । रामचरितमानस में तुलसी की भक्ति दास्य भाव की है। वे स्वयं को सेवक और प्रभु राम को अपना स्वामी मानते हैं तथा उनके चरणों में निरन्तर रत रहने का वरदान मांगते हैं।

महाकाव्यों में श्रेष्ठतम — श्री रामचरितमानस हिन्दी के महाकाव्यों में श्रेष्ठतम है। इसमें महाकाव्य के सभी लक्षण विद्यमान हैं। कथा पौराणिक एवं विस्तृत है। राम धीरोदात्त नायक हैं। श्रृंगार एवं शान्त रस की प्रधानता है । यह ग्रन्थ अवधी भाषा में लिखा गया है तथा उद्देश्यपूर्ण रचना है ।

उपसंहार —अत: उप्पर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कह सकते हैं कि रामचरितमानस एक अद्वितीय ग्रन्थ है जो सबके लिए उपयोगी एवं शिक्षाप्रद है। यही कारण है कि आज से ४२६ वर्ष पहले लिखी गई यह रचना वर्तमान समय में भी पूर्णतः प्रासंगिक है। लोग 24-24 घंटे पाठ करते हैं।

Gyansindhu Classes